मॉस्को-रशिया। एम्बेसी ऑफ इंडिया द्वारा भारतीय महिलाओं के लिए आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करने के लिए आमंत्रित किये जाने पर वहाँ पर उपस्थित हैं ब्र.कु. सुधा।

मोतिहारी-बिहार। भारतीय दलित साहित्य अकादमी के बिहार प्रदेशाध्यक्ष एवं कई राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित जागा राम शास्त्री को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. यशोदा। साथ हैं ब्र.कु. अशोक वर्मा तथा ब्र.कु. कुसुम।

हाथरस-उ.प्र.। एम.जी. पॉलीटेक्निक में 'स्व प्रबंधन एवं तनाव प्रबंधन' विषय पर कार्यशाला के दौरान सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शान्ता। साथ हैं संस्था के प्राचार्य इंजीनियर मुकेश कुमार, प्रसिद्ध प्रेरक एवं इंजीनियर ब्र.कु. भारत भूषण तथा ब्र.कु. रानी।

झालावाड़-राज.। सड़क दुर्घटना में पीड़ित लोगों के लिए आयोजित विश्व यादगार दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ट्राफिक पुलिस इंचार्ज इस्लाम अली, ट्राफिक पुलिस मांगीलाल, शिवप्रसाद जी, ओमप्रकाश नामा, छीपा जी, ललित पहाड़िया, ब्र.कु. मीना तथा अन्य।

कानपुर-बर्रा(उ.प्र.)। आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए डॉ. संजय कपूर,चेयरमैन,पनकी इंडस्ट्रीयल डेवलपमेंट एंड चेयरमैन,कानपुर क्रिकेट एसोसिएशन। साथ हैं ब्र.कु. शशि तथा अन्य।

मोतिहारी-बिहार। पतौरा गीता पाठशाला में 'समय की समीपता और पुरुषार्थ' विषय पर आयोजित सेमिनार में उपस्थित हैं ब्र.कु. जोखन, ब्र.कु. अशोक, ब्र.कु. यशोदा, ब्र.कु. शैलेन्द्र, ब्र.कु. विभा तथा ब्र.कु. संजय।

तपस्या के पथ पर...

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,मा.आबू

साधना पथ धूप और छाँव की मिचोलियों का खेल है। साधना पथ पर चलते-चलते कई बार उतार-चढ़ाव दिखाई पड़ते हैं। कई बार ऐसा निश्चय हो जाने पर भी जीवन यात्रा में माया की आंधी उसे बेहोश कर देती है। जब बेहोशी से जागते हैं तो महसूस होता है, अरे, कहाँ गड्ढे में गिर गये, जो मेरा लक्ष्य ही नहीं। होश में आने पर समय बीत जाने का पश्चाताप उन्हें घेर लेता है और सोचने को बाध्य कर देता है। लक्ष्य तक पहुंचने के लिए लक्ष्य केन्द्रित तपस्या की आवश्यकता है। अगर हम उस पर कामयाब हो जाते हैं तो मन इच्छित फल प्राप्त करने से हमें कोई रोक नहीं सकता। तपस्या की धारा को कैसे तीक्ष्ण करें उस पर चिन्तन-मनन करना ज़रूरी है, तब ही साधना पथ पर निखार आयेगा।

ज्ञान मार्ग में आने पर हम सबने हमारा लक्ष्य समझ लिया। यह भी भगवान के महावाक्य कानों में सुनाई देते रहे कि, भगवान और उसका जो कुछ है वह हमारा है। दूसरे शब्दों में कहें तो बाबा मेरा, मैं बाबा का। बस इस महावाक्य पर अडोल रहना ही जीवन यात्रा की सच्ची तपस्या है। तपस्या मास में हम सभी कुछ ऐसे बिन्दु पर नज़र डालें जिससे हमें अपनी संतुष्टता हो कि हम अवश्य इन्हें धारण कर लक्ष्य तक पहुंच जाएंगे।

बाबा अपना नज़र आये

जैसे ही हमने यह सुना कि बाबा हमारा है। यह महावाक्य हमारे जीवन के साथ कितना जुड़ जाता है और अंत:करण की गहराइयों से अभिभूत होता है। जिससे हम बाबा के बहुत नज़दीक हैं ऐसी महसूसता होती है। भगवान हमारा है, हम उनके बहुत करीब हैं। जो भक्ति में दूरी बनी हुई थी, जो शास्त्र पढ़ने से महसूस होता था, वह अंतर कितना मिटा है। बाबा ने महावाक्य कहे कि मैं तुम्हारी मदद के लिए सदा साथ हूँ। ऐसा अनुभव इस जीवन यात्रा में बना रहे। केवल मदद मांगते न रहें भक्तों की

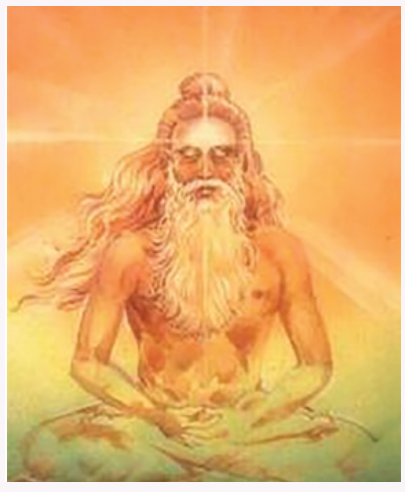

तरह। लेकिन हम मदद के पात्र बन जाएं। परन्तु प्रश्न यह है कि वह कैसे करें और क्या करें जो बाबा हमें अपना नज़र आये? उसके लिए आवश्यकता है बाबा की आज्ञाओं का सम्पूर्ण रूप से पालन करने की। तब तो हम भी समीप नज़र आएंगे। तब उसे भी लगेगा कि हम उसके हैं। तब किसी परिस्थिति और विघ्न में पहले हम औरों को याद नहीं करेंगे, जो हमारी पुरानी आदत पड़ी हुई है। समस्या आई तो हमारा मन-बुद्धि औरों की तरफ चला जाता है, कभी किसी का सहारा ढूंढ़ते तो कभी किसी का। लेकिन जब परमात्मा से अपनापन है, उसमें विश्वास रहेगा कि वो हमारा अपना है तो सभी बातें सरल हो जाएंगी। उसको छोड़कर कहीं जाने की ज़रूरत नहीं। लेकिन अभी तक ऐसा होता है कि उसे छोड़कर इधर-उधर देखते हैं मदद के लिए। अब तक हमें अनुभव ही नहीं कि वह सर्वशक्तिवान है। इस अनुभूति की ओर हम बढ़ते चलें। यही हमारी तपस्या का प्रैक्टिकल सबूत हो जायेगा। इस बात पर चिन्तन करें कि क्या परमात्मा और हम समीप आ रहे हैं।

भगवान के समीप लाने वाली बातें

कौन सी ऐसी बातें हैं जिससे बाबा से हमारी दूरी बढ़ जाती है और कौन सी बातें हमें बाबा के समीप लाती हैं, इस पर विचार करने की ज़रूरत है। । भगवान ने वरदान देने का वायदा किया था, उसमें हमने कुछ नहीं किया।

हमारा काम बहुत बढ़ रहा हो और दोनों के संघर्ष में हमारा मन चिड़चिड़ा होता जा रहा हो, ऐसा भी हो सकता है। हमारा लक्ष्य है कर्मयोगी बनने का। कर्म-योग का बैलेंस रखना। पूरा ब्राह्मण जीवन कर्मयोगी जीवन है। अगर कर्म और योग अलग-अलग हो जाता है तो दोनों का रस नहीं मिलता। बैठकर योग करेंगे तब मन अधीन कर लेगा। अपनी इच्छा अनुसार कर्म को चलाते हैं। तो दोनों को साथ-साथ करना, ये जीवन को सरल बनाता है। तपस्या हमें - शेष पेज 11 पर

आखिर किस बात का अहंकार है हमें ?

- ब्र.कु. निकुंज,मुम्बई

हमें बचपन से ही यह सिखाया जाता हैं कि 'मैं-मैं' की बकरी नहीं बनना क्योंकि जो भी अहंकार के इस मैं मैं मैं फँसते हैं, उनका जीवन अंतत: नरक समान बन ही जाता है। आखिर क्या है ये अहंकार, जो नुकसानदायक होते हुए भी हम उसे छोड़ने को तैयार नहीं होते?

गीता के तीसरे अध्याय में कहा गया है, हमारे सभी कर्म वास्तव में प्रकृति के गुणों द्वारा किये जाते हैं, किन्तु जो अज्ञानी होते हैं व जिनका अन्त:करण अहंकार से मोहित है, वे समझते हैं कि कर्म उन्होंने ही किया, अर्थात 'मैं करता हूँ' यह अहंकार रख कर वे स्वयं को अनेक प्रकार के बंधनों में बांध लेते हैं, इसलिए ही हमें बचपन से ही यह सिखाया जाता है कि 'मैं-मैं' की बकरी नहीं बनना क्योंकि जो भी अहंकार के इस मैं-मैं में फँसते हैं, उनका जीवन अंतत: नरक समान बन जी जाता है। आखिर क्या है ये अहंकर, जो नुकसानदायक होते हुए भी हम उसे छोड़ने को तैयार नहीं होते?

सुप्रसिद्ध उपन्यासकार सी.एस. लुईस ने लिखा है कि 'अहंकार की तृप्ति किसी चीज़ को पाने से नहीं अपितु उस चीज़ को किसी दूसरे की अपेक्षा ज़्यादा पाने से होती है 'वस्तुत: अहंकार का अर्थ ही अपने को दूसरों से श्रेष्ठ सिद्ध करने का दावा है, इसी वजह से लोग लोभ करते हैं ताकि वे दूसरों से संपन्न दिखें, दूसरों को दबाने की चेष्टा करते हैं ताकि अपनी प्रभुता सिद्ध कर सकें और दूसरों को मूर्ख बनाना चाहते हैं ताकि स्वयं बुद्धिमान सिद्ध हो सकें। याद रखें, अहंकार सदैव दूसरों को मापदंड बना कर चलता है। दूसरों से तुलना कर अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने की वृत्ति का नाम ही अहंकार है।

इतिहास इस बात का गवाह है कि कैसे महान सभ्यताओं, शक्तिशाली राजवंशों और सम्राज्यों ने अहंकारी, अभिमानी और घमंडी शासकों के हाथों में गिरकर अपने मूल अस्तित्व को ही मिटा दिया, अतीत के राजा, महाराजाओं और वर्तमान के शासकों के घमंडी स्वभाव की वजह से ही यह कहावत बनाई गई है कि 'सत्ता भ्रष्ट करती है और पूर्ण सत्ता बिल्कुल ही भ्रष्ट करती है'।

पुराणों में उल्लेख आता है कि देवता असुरों से जब जब भी पराजित हुए तो उसका कारण रहा उनका असंगठित होना, क्योंकि प्रत्येक देवता को अपनी शक्ति का अहंकार रहा और इसीलिए वे आपस में तालमेल बिठा नहीं सके। कहने का भाव यह है कि किसी व्यक्ति में सारे सद्गुण होते हुए भी यदि उसके भीतर अहंकार विद्यमान है तो वह उसके सद्गुणों की शक्ति को उसी प्रकार आवृत्त कर लेगा, जिस प्रकार आंख में पड़ा हुआ तिनका सारी दृष्टि को ढ़क लेता है। महाभारत में इस प्रकार के कई प्रसंग आते हैं, जब भगवान ने अर्जुन के अभिमान का मर्दन किया और उसे भगवत प्राप्ति में सबसे बड़ा अवरोध बताया। इसी प्रकार रामायण में भी नारद के अभिमान का प्रसंग आता है और वे अनुभव करते हैं कि उनके मिथ्या अभिमान के कारण वे भगवान से कितने विमुख होते जा रहे हैं।

अहंकारी व्यक्ति सदा अपने आप को दूसरों की भेंट में अधिक महत्वपूर्ण मानता है और अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए वो अन्य से टक्कर लेने के लिए सदैव तत्पर रहता है। किन्तु ऐसा करने में वह ये भूल जाता है कि महत्वपूर्ण होना एक अलग बात है और स्वयं को महत्वपूर्ण मानना तथा उसे सिद्ध करना सर्वथा दूसरी बात है। हमें इस हकीकत को भूलना नहीं चाहिए कि संसार में सबसे महत्वपूर्ण यदि कोई है तो वह सर्वशक्तिमान परमात्मा है और उस सर्वोच्च सत्ता की ऐसी कोई चेष्टा दिखाई नहीं देती जो वह अपने आपको महत्वपूर्ण सिद्ध करने के लिए करता हो।

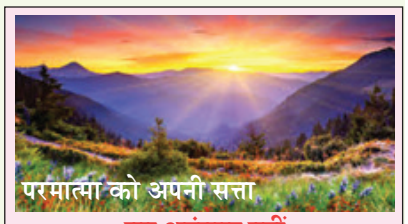

परमात्मा को अपनी सत्ता का अहंकार नहीं

अब जो समस्त संसार के स्वामी हैं, वे परमपिता परमात्मा अपनी सत्ता का अहंकार नहीं रखते हैं, तो क्या कारण है कि हम जैसे अरबों व्यक्तियों के होते हुए हम अपने आपको सबसे महत्वपूर्ण मानें और दूसरों से टक्कर लेते फिरें। इसलिए, बेहतर होगा कि हम अहंकार रूपी इस बीमारी को परमात्म कृपा का टीका लगाकर सदा के लिए मुक्ति प्राप्त करें, अन्यथा यह ऐसी खतरनाक बीमारी है जो हमारे जीवन को संम्पूर्णत: उजाड़ सकती है।